रिकार्ड– जो पिया के साथ है..... ओमशांति प्रातःक्लास 6–6–67

जो ज्ञान सागर के साथ है उनके लिए यह ज्ञान की बरसात है। है ज्ञान। उनको फिर बरसात भी कह देते हैं। तुम बाप के साथ हो ना। भल विलायत में हो वा कहां भी हो याद तो रखते ही हो ना। जो भी बच्चे याद में रहते हैं वो सदैव साथ ही हैं। याद में रहने से साथ रहते हैं और विकर्म विनाश होते हैं। फिर होता है विकर्माजीत सम्वत्। फिर बाद में जब रावणराज्य होता है तब कहते हैं विकर्माजीत का सम्वत्। वो विकर्माजीत। वो विकर्मी। अभी विकर्माजीत बन रहे हो। फिर विकर्मी बन जावेंगे। इस समय सभी अति विकर्मी हैं। किसी को भी अपने धर्म का पता नहीं है। आज बाबा एक छोटा सा प्रश्न पूछते हैं। सतयुग में देवतायें यह जानते हैं कि हम आदि सनातन देवी देवता धर्म के हैं?जैसे तुम समझते थे कि हम हिंदू धर्म के हैं। कोई कहेंगे हम क्रिश्चियन धर्म के हैं। वैसे वहां देवता अपने को देवी–देवता धर्म का समझते हैं?विचार की बात है ना। वहां दूसरा कोई धर्म तो है नहीं जो समझते हैं कि हम फलाने धर्म के हैं। यहां पर बहुत धर्म हैं तो पहचान देने लिए अलग2 नाम रख दिये हैं। उनको पता भी नहीं रहता है कि कोई धर्म होता है। उनकी ही राजाई है। अब तुम जानते हो कि हम तो आदि सनातन .....के हैं। देवी–देवता और कोई को कहा नहीं जा सकता। पतित होने कारण अपने को देवता कहला नहीं सकते। पवित्र को ही देवता कहा जाता है। वहां ऐसी कोई बात होती नहीं। कोई से भेंट की जा सकती है। अब तुम संगम पर हो। जानते हो कि आदि सनातन देवी–देवता धर्म स्थापन हो रहा है। वहां तो धर्म की बात ही नहीं है। है ही एक धर्म। बच्चों को यह भी समझाया है कि वो खुद कहते हैं कि महाप्रलय होगी अर्थात् कुछ भी नहीं रहता है। यह भी रांग हो जाता है। बाप बैठ समझाते हैं कि राइट क्या है। शास्त्रों में जलमई दिखा दिया है। बाप बैठ समझाते हैं कि सिवाय भारत के बाकी सब जलमई हो जाता है। इतनी सृष्टि क्या करेंगे?एक भारत ही में देखो तो कितने गांव हैं। पहले जंगल होता है फिर उनसे वृद्धि होती जाती है। वहां तो सिर्फ तुम आदि सनातन देवी–देवता धर्म के ही रहते हैं। यह तुम ब्राह्मणों की बुद्धि में बाबा धारणा करवा रहे हैं। दुनियां तो सारी ही कुछ नहीं जानती है। इसलिए ही कहा जाता है तुच्छ बुद्धि। अब तुम जानते हो कि उंच ते उंच शिवबाबा कौन,उनकी पूजा क्यों की जाती है?अक आदि के फूल क्यों चढ़ाते हैं?वो तो निराकार है ना। कहते हैं नाम ,रूप से न्यारा है ;परंतु नाम,रूप से न्यारी तो कोई चीज होती नहीं। तब क्या है जिनको फूल आदि चढ़ाते हैं। पहले2 पूजा उनकी होती है। मंदिर भी उनके बनते हैं ;क्योंकि भारत की ,सारी दुनियां की और बच्चों की सर्विस करते हैं। मनुष्यों की ही सर्विस की जाती है ना। इस समय तुम अपने को देवी देवता धर्म के नहीं कहला सकते हो। तुमको पता भी नहीं था कि हम सो देवी देवता धर्म के थे और अब आकर क्या बने हैं?अब बाप समझाते रहते हैं तो समझना चाहिए ना। यह नालेज सिवाय बाप के और कोई दे नहीं सकते हैं। उनको ही कहते हैं ज्ञान का सागर नालेजफुल। गाया भी हुआ है रचता और रचना को ऋषि–मुनि आदि भी नहीं जानते हैं। नेति2 करते गये हैं। हम नहीं जानते हैं। यह सच्च कहते थे। रचता को ही नहीं जानते हैं तो कुछ भी नालेज नहीं है। जैसे छोटे बच्चे को नालेज होती है क्या?जैसे2 बड़ा होता जावेगा बुद्धि खुलती जावेगी। बुद्धि में आता जावेगा कि विलायत कहां है ,यह कहां है। तुम बच्चे भी पहले इस बेहद की नालेज को कोई भी कुछ भी नहीं जानते थे। यह भी जानते हैं कि भल हम शास्त्र आदि पढ़ते हैं ;परंतु जानते कुछ भी नहीं हैं। जैसे तुच्छ बुद्धि थे। वो नहीं जानते थे। मनुष्य ही इस ड्रामा के एक्टर्स हैं ना। (खेल) सारा तुम्हारे पर ही बना हुआ है। भारत ही की हार और भारत की ही जीत। भारत में सतयुग आदि में देवता धर्म था। पवित्र धर्म था। अपवित्रता के कारण अपने को देवता बना नहीं सकते। फिर भी श्री2 नाम रखवा दिया है। श्रीमती फलानी। अब श्री का अर्थ कुछ भी नहीं समझते हैं। श्री माना ही श्रेष्ठ। श्रेष्ठ कहा जाता है देवताओं की दुनियां को। श्रीमत भगवानोवाच्य कहा जाता है ना। अब श्री कौन (ठहरे) ?

जो बाप के सम्मुख सुनकर श्री बनते हैं या जिन्होंने अपने को श्री कहलाया है। अपने को डबल सिरताज बना दिया है। कितने बड़े नाम अपने को देते हैं। बाप के कर्तव्यों पर जो2 नाम है वो सब अपने पर रख लिये हैं। यह सब हैं रेजगी बातें। फिर भी बाप कहते हैं कि (बच्चे) एक बाप को याद करते रहो। यह वशीकरण मंत्र है। तुम रावण पर जीत पहनकर जगतजीत बनते हो। बार2 अपने को आत्मा समझो। यह शरीर तो यहां पांच तत्वों का बना हुआ है। छूटना है। फिर बनता है। आजकल तो गर्भ में प्रवेशकर फिर अंदर में ही खतम हो जाते हैं। ऐसे2 केस भी होते रहते हैं। अब आत्मा तो अविनाशी । अविनाशी आत्मा को अब अविनाशी बाप पढ़ा रहे हैं संगमयुग पर। बस कहते हैं कि कुछ भी करो भल कितने भी विघ्न आदि पड़ते हैं, माया के तूफान आते हैं तुम बाप ही की याद में रहो। तुम समझते हो कि हम ही सतोप्रधान थे अब तमोप्रधान में आये हैं। तुम्हारे में भी नम्बरवार जानते हैं। तुम बच्चों की बुद्धि में है कि हमने ही पहले2 भक्ति की थी। जरूर जिसने पहले2 भक्ति की है उसने ही शिव का मंदिर बनाया ;क्योंकि धनवान भी तो वो (ही) होते हैं ना। बड़े राजा को देखकर और भी राजायें प्रजा भी करेगी। यह सब है डिटेल की बातें। एक सेकेंड में जीवनमुक्ति भी कहा जाता है। फिर कितने साल लग जाते हैं समझाने में। ज्ञान तो (सहज) ही है उसमें इतना टाइम नहीं लगता है। पुकारते भी हैं कि बाबा हमको पतित से आकर पावन बनाओ। ऐसे नहीं कहते हैं कि बाबा हमें विश्व का मालिक बनाओ। सब कहेंगे पतित से पावन बनाओ। पावन दुनियां कहा जाता है सतयुग को। इसको पतित दुनियां कहेंगे। अपने को पतित समझते नहीं हैं पतित दुनियां कहते हुये भी। अपने से नफरत भी नहीं रखते हैं ;परंतु बाप कहते हैं कि पति तो है ना। तुम किसी के हाथ का नहीं खाते हो तो कहते हैं हम भंगी हैं क्या?अरे, तुम तो खुद ही कहते हो ना। पतित तो सभी हैं ना। तुम कहते भी हो हम पतित हैं। यह देवतायें पावन हैं। तो पति को क्या कहेंगे?गायन भी है ना अमृत छोड़कर विख काहे को खावे?विख तो खराब है ना। बाप कहते हैं यह विख तुमको आदि,मध्य,अंत तक दुःख देता है ; परंतु उसको प्वाइजन समझते थोड़े ही हैं। जैसे अमली अमल बिगर रह नहीं सकते। शराब की आदत वाले शराब बिगर रह नहीं सकते हैं। बाबा ने ऐसे2 शराबी भी देखें हैं कि 8/10 बोतल रोज का पीना कामन है। उनकी महफिल लगी पड़ी है। लड़ाई का समय होता है तो उनको शराब पिलाकर नशा चढ़ाकर भेज देते हैं। नशा मिला बस। समझेंगे हमको ऐसा करना है। उन लोगों को मरने का डर नहीं रहता। कहीं भी बाम्ब्स ले जाकर बाम्ब्स सहित ही गिरते हैं। गायन भी है कि मूसलों की लड़ाई लगी। राइट बात अभी तुम प्रैक्टिकल में देख रहे हो। आगे तो सिर्फ पढ़ते ही थे कि पेट से मूसल निकले फिर यह हुआ। अभी तुम समझते हो कि पांडव कौन है, कौरव कौन है। पांडव जीते जी मरने के लिए ,पुरानी जुत्ती छोड़ने के लिए पुरुषार्थ कर रहे हैं। कहते हैं ना पुरानी जुत्ती छोड़कर फिर नई लेनी है। बाप भी कहते हैं कि हमने यह पुरानी जुत्ती ली है। बच्चों को ही समझाते हैं। तुम बच्चे (ही) यह समझते हो कि बाप बिना तो यह नालेज कोई सिखा नहीं सकते। बाप कहते हैं कि मैं कल्प2 आता हूँ। मेरा नाम है शिव। शिव जयंती भी मनाते हैं। भक्तिमार्ग के लिए कितने मंदिर आदि बनाते हैं। दिन प्रतिदिन वृद्धि को ही पाते जाते हैं। पूजा के लिए तो बहुत मंदिर बनाने पड़े नां। इसलिए नाम भी बहुत रख दिये हैं। इस समय तुम्हारी पूजा हो रही है। यह भी तुम बच्चे ही जानते हो कि जिनकी हम पूजा करते हैं वो ही हमको पढ़ा रहे हैं। जिन ल.ना. की हम पूजा करते थे वो ही हम बन रहे हैं। यह ज्ञान बुद्धि में है।स्मरण करते रहो। फिर औरों को भी सुनाना है। बहुत हैं जो धारण नहीं कर सकते हैं। बाबा कहते हैं जास्ती धारण नहीं कर सकते हो तो हर्जा नहीं है। याद की तो धारणा है ना। बाप को ही याद करते रहो। जिनकी मुरली नहीं चलती है तो यहां पर बैठकर स्मरण करे। यहां तो कोई बंधन, झंझट आदि है नहीं। घर में बाल–बच्चों आदि का वो वातावरण देखकर वो नशा गुम हो जाता है। बहुत सहज है किनको

भी समझाना। वो लोग तो गीता आदि पूरी कंठ कर लेते हैं। सिक्ख लोगों को भी ग्रंथ कंठ रहते हैं। तुमको क्या कंठ करना है? बाप को। बाप को कंठ तो जनावर भी करेंगे। तुम कहते (भी) हो बाबा। यह है बिल्कुल नई चीज। यही एक समय है जबकि आपको अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। 5000वर्ष पहले भी सिखाया था। और कोई की ताकत नहीं जो कि ऐसे समझा सके। कह नहीं सकते। ज्ञान सागर है ही एक बाप। दूसरा कोई हो ना सके। ज्ञान सागर बाप ही तुमको समझाते हैं। आजकल तो ऐसे भी बहुत निकले हैं जो कहते हैं कि हम ही अवतार उतरे हैं। भगवान ने मेरे में प्रवेश किया है। है सब झूठ। झूठे भगवान आदि कहलाने वाले बहुत हो गये हैं। इसलिए ही सच्च की स्थापना में विघ्न पड़ते हैं ;परंतु गाया गया है कि सच्च की बेड़ी डोले डूबे नहीं। दुनियां में तो बहुत झूठ है। विष्णु नाम, दुःखहर्ता नाम भी अपने उपर रख लेते है। मद्रास की तरफ तो बहुत नाम ऐसे हैं। भक्तवत्सलम। कोई2 तो डबल नाम भी रखते हैं। ल.ना.राधा–कृष्ण दोनों इकट्ठे नाम भी बहुतों के हैं। वास्तव में राधा अलग है। कृष्ण अलग है। यह तो सब बातें बाप बैठ सुनाते हैं और बाप से पूरा वर्सा पाने लिए बच्चों को युक्ति भी समझाते हैं। अब तुम बाप के पास आते हो तो तुम्हारे दिल में खुशी रहनी चाहिए। आगे यात्रा पर जाते थे तो दिल में क्या आता था?अब घर–बार छोड़कर यहां आते हो तो दिल में क्या आता है कि हम बापदादा के पास जाते हैं। बाप ने यह सब समझाया है कि मुझे सिर्फ शिवबाबा कहते हैं। जिसमें मैंने प्रवेश किया है वो है ब्रह्मा। ब्रादरियां होती हैं ना। पहले2 ब्रादरी ब्राह्मणों की फिर देवताओं की। तुम्हारी चार ब्रादरियां हो जाती हैं। जब ज्ञान नहीं था तो शूद्र वर्ण के थे। तुम विचार करेंगे तो इसके पहले हम शूद्र थे। उसके आगे वैश्य थे। तो हमारा हो गया ग्रेट3ग्रैंड फादर। ग्रेट शूद्र,ग्रेट वैश्य, ग्रेट क्षत्रिय उसके पहले ग्रेट ब्राह्मण थे। अब यह बातें सिवाय बाप के और कोई समझा नहीं सकते। दूर देश में रहने वाला बाप आकर दूर देश का सारा ज्ञान बच्चों को देते हैं। तुम समझते हो कि हमारा बाबा दूर देश से इसमें आते हैं। यह पराया देश ,पराया राज्य है। शिवबाबा को अपना शरीर है नहीं। और वो है ज्ञान का सागर। स्वर्ग का राज्य भी उन्हीं को देना है। कृष्ण थोड़े ही देंगे। शिवबाबा ही देंगे। कृष्ण को कब बाबा नहीं कहेंगे। बाप ही राज्य देते हैं। बाप से ही वर्सा मिलता है। अब हद के सब वर्से पूरे होते हैं। सतयुग में तुमको यह मालूम नहीं रहता है कि हमने यह 21जन्मों का वर्सा लिया हुआ है। अभी ही यह जानते हो कि हम 21जन्मों का वर्सा आधा कल्प के लिए ले रहे हैं। 21पीढ़ी माना पूरी पीढ़ी। जब समय पूरा होगा तब समय पर शरीर जैसे सर्प पुरानी खल छोड़कर नई लेते हैं ना। हमारा भी पार्ट बजाते2 यह चोला पुराना हो गया है। सन्यासी लोग तो सिर्फ मिसाल ही देते हैं। समझते समझाते कुछ भी नहीं हैं। जो सुनावेंगे कहेंगे हां सत्य। पवन से हनुमान पैदा हुआ, सत्य। कितनी बातें बना दी हैं। वास्तव में भ्रमरी का मिसाल भी अब का ही है। सच्चे2 ब्राह्मण तुम हो। तुमको कहा जाता है (कीड़ों) को आप समान बनाओ। ....कीड़े को ले आकर बैठाकर भुन2 करो। भ्रमरी भी भुन2 करती है। फिर कोई में तो पर आ जाते हैं। कोई सड़ जाते हैं। मिसाल अभी के ही हैं। अभी बनारस में बहुत अच्छा सेंटर खोल रहे हैं। बाबा को वहां के लिए बहुत अच्छे2 बच्चे चाहिए। वहां बहुत विद्वान,पंडित आदि से सामना करना होगा। शास्त्रार्थ करते हैं ना। दूसरे कोई का शास्त्रार्थ हो नहीं सकता है। सिवाय तुम्हारी गीता। गीता ही मुख्य है। वो लोग वेट2 करते रहते हैं। वास्तव में सर्व शास्त्रमईशिरोमणी भगवद गीता गाई हुई है। इससे पुराना शास्त्र कोई हो नहीं सकता। तो वहां जाकर पंडितों आदि से बहुत पकड़ना है। बहुत झूठे2 टाइटिल दे दिये हैं। अभी वहां पर सेंटर खोल रहे हैं। फिर वहां से सबको निमंत्रण दिया जावेगा। गोया इस समय दुश्मनों को निमंत्रण दिया जाता है। इन गुरुओं आदि का भी मुझे आकर उद्धार करना है। तो वो गुरू लोग फिर और कोई का उद्धार कैसे करेंगे?बच्चों को नूरे रत्न कहा जाता है। बाप भी तुमको कहते हैं मेरे नूरे रत्न। तुमको अपना बनाया है तो तुम भी हमारे हुये ना। ऐसे बाप को जितना याद करेंगे ,पाप कट जावेंगे। और कोई को भी याद करने से पाप नहीं कटते।